एक ईश्वर, एक संसार, एक परिवार के निर्माण की तीर्थ यात्रा पर निकलने से पहले कुछ सवालों का जवाब आवश्यक है :–

1. यदि सबका ईश्वर एक है तो इसकी औलादों के बीच असमानता क्यों? क्या हममें से कुछ लोग बढ़िया और दूसरे लोग घटिया ईश्वर की संतानें हैं।
2. ऊँची–नीची नस्ल, ऊँची–नीची जाति के आधार पर आखिर स्वयं को हम क्यों बांटते हैं? अथवा धर्म, सम्प्रदाय या मज़हब के नाम पर क्यों बांटते हैं? क्या ये दीवारें हमने बनाई है? क्या धर्मवाद, जातिवाद अथवा राष्ट्रवाद की दीवारें कृत्रिम और गैर ज़रूरी नहीं है?
3. लैंगिक आधार पर हो रहे घृणा या भेदभाव को हम कैसे बर्दास्त कर सकते हैं? क्या ईश्वर केवल पुरुष वाचक ही हो सकता है स्त्री वाचक नहीं? हमारे आपसी रिश्तों के निर्धारण का अधिकार पितृसत्ता के हाथ में ही क्यों रहे?
4. क्या आप मानते हैं कि कुछ को अमीर और कुछ को गरीब बनाकर पैदा करना ईश्वर की इच्छा है? अथवा यह हमारे नीति–नियंत्ताओं के अव्यवहारिक तथा गलत आर्थिक नीतियों का परिणाम है? क्या समान स्वास्थ्य सेवा, पढ़ने–लिखने का समान अधिकार तथा विकास का समान अवसर सभी बच्चों का अधिकार नहीं होना चाहिए?
5. यदि ईश्वर सर्वव्यापी है तो सत्य, प्रेम, करुणा और न्याय जैसे ईश्वरीय गुणों का ध्यान कर उन्हें अपने जीवन में उतारने के लिए क्या हमें किसी मध्यस्थ की आवश्यकता है? आखिर क्यों हम किसी खास धर्मग्रंथ, अवतार अथवा संदेशवाहक के प्रति तार्किक नहीं हो पाते?
6. बड़े–बुजुर्गों द्वारा धार्मिक रूढ़िवादी मान्यताओं, कर्मकाण्डों तथा परम्पराओं आदि को अबोध बच्चों पर थोपना क्या उचित है ? क्या बच्चों को वयस्क होकर मनमाफिक धर्म का चयन तथा उसे मानने की आजादी नहीं होनी चाहिए? धर्म के नाम पर बच्चों के व्यक्तित्व विकास को जकड़ देना क्या सही है?
7. क्या केवल स्वाद के लिए पशु–पक्षियों को मारना उचित है? व्यापार तथा उद्योग में मुनाफाखोरी के लिए इनका कृत्रिम यान्त्रिक प्रजनन और उनकी हत्या को क्या आप जायज़ मानते हैं? क्या ऐसी हत्याएं होनी चाहिए अथवा होने देना चाहिए? क्या मांसाहार की जगह शाकाहार अपनाकर हमें स्वस्थ, सुखी, अहिंसक एवं पर्यावरण के पोषक नहीं बन सकते?

वसुधैव कुटुम्बकम् की उपरोक्त भावना से यदि आप सहमत हों तो आज और अभी इस विश्व परिवार के सदस्य बनें। इस परिवार का न कोई मुखिया होगा और न ही कोई मुख्यालय। केवल आपका हृदयालय ही इसका मुख्यालय और आप स्वयं इसके मुखिया हैं। वेद के मनुर्भव की भावना को स्वीकार कर, मानव मानव एक समान का नारा साकार करें और जातिवाद मुक्त, साम्प्रदायिकता मुक्त, नर–नारी विषमता मुक्त, नशा मुक्त, अंधविश्वास एवं पाखण्ड मुक्त, भ्रष्टाचार मुक्त तथा हिंसा एवं शोषण मुक्त समाज स्थापित करना ही ईश्वर की उपासना के श्रेष्ठ एवं सरल मार्ग पर अग्रसर हों।

वेबसाइट : –**www.swamiagnivesh.com**

ईमेल– agnivesh70@gmail.com

संपर्क – 011-23363221 , 23367943

यदि ईश्वर एक, संसार एक तो क्यों न बने परिवार एक

आओ बनाएँ सम्पूर्ण जहॉन को एक परिवार–वसुधैव कुटुम्बकम्

"संसार के सभी तत्वों में ईश्वरीय अंश विद्यमान है।

हे मनुष्य! अपनी आवश्यकतानुसार ईश्वर प्रदत्त इन संसाधनों का त्यागपूर्वक उपभोग करो

न कि अपनी लालच और उपभोक्तावाद के वशीभूत होकर"

ईशा वास्यमिदँ सर्वं यत्किन्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुन्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।

यजुर्वेद 40वां अध्याय, प्रथम मंत्र

(ईशावास्योपनिषद प्रथम मंत्र)

1. प्रस्तावना :–

वसुधैव कुटुम्बकम् : सर्वकालिक, सार्वभौमिक एकीकरण का सिद्धांत! हजारों वर्ष पहले से हमारे वैदिक ऋषियों ने वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा दी है जिसके अनुसार संसार के सभी जीव–जन्तु, पशु–पक्षी तथा मनुष्य एक ही परिवार के सदस्य है। यह विश्व को दिया गया भारतीय आध्यात्मिक परम्परा का महत्वपूर्ण उपहार है। एकता का यह सिद्धांत एक दूसरे के परस्पर जुड़ाव एवं परस्पर निर्भरता के माध्यम से बंधा है।

विश्व के प्रथम नवगठित राष्ट्र अमेरिका में इसी सिद्धांत को मिताकुए ओनासियन के नाम से अपनाया गया है तो अफ्रिका में इसे "**उबुन्तू** अर्थात् मेरा जीवन आपके होने से ही है" कहा जाता है। इसी सिद्धांत ने हमारे पूर्वजों को पशु–पक्षियों और मनुष्यों के साथ मिलकर विकास का आधार तैयार किया है। वसुधैव कुटुम्बकम् की यही वैदिक मान्यता पिछले 2000–3000 साल में विकसित अथवा जन्में अन्य धर्मों में भी देखा जा सकता है। ईसाई धर्म में इसे सुनहरा सिद्धांत कहा गया है और इस्लाम में इसे तौहीद अथवा एकत्व और एक अल्लाह की सकंल्पना द्वारा तथा मुतफिकालीन अर्थात् एक–दूसरे की परस्पर निर्भरता के सिद्धांत के रुप में समझाया गया है। इस्लाम में रब्बुल आलेमीन की उपासना कही गई है न कि रब्बुल मुसलमीन। इसी तरह इस्लाम के पैगम्बर मोहम्मद (सल्ल.) को रहमतुलिल आलेमीन (मानव मात्र के प्रति दयालु) कहा है न कि रहमतुलिल मुससमीन। बौद्ध दर्शन एकीकरण के इसी सिद्धांत को सभी जीवों के आपसी जुड़ाव, व निर्भरता तथा निचेरिन अर्थात आत्मा रुप में एक पर शरीर रुप में अनेक के तहत मान्यता प्रदान करता है।

हाल के वैज्ञानिक खोजों ने भी हमारे दार्शनिक तथा आध्यात्मिक एकत्व की मान्यता की पुष्टि की है। यथा क्वांटम भौतिकशास्त्री डेविड बूम की खोजें तथा आइन्सटाइन, फिज़्रोफ काप्रा तथा कतिपय विकासवादी प्राणीशास्त्रीय सिद्धांतों में भी देखा जा सकता है..

वर्तमान में जब चारों ओर अंधकार और निराशा का माहौल समाज में बना हुआ है, समाज को विभाजित करने का षडयंत्र राजनीतिक स्तर पर किया जा रहा हो और धार्मिक सामाजिक संस्थाएँ एवं परम्पराएँ सकारात्मक निर्माणकारी भूमिका न निभा रही हों तो यह और अधिक आवश्यक बन जाता है कि हम पुनः एक कुटुम्ब अथवा परिवार की

मान्यता को मजबूती से अपनाएँ। आर्यसमाज के प्रवर्तक एवं क्रांतिकारी संन्यासी महर्षि दयानन्द के अनुसार ''संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना'' और उन्नति के सोपान पर चढ़ते हुए, आगे बढ़ते हुए याद रखना पड़ेगा कि ''प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिये किन्तु **सबकी** उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये'' युग पुरुष महात्मा गांधी की मान्यतानुसार ''परिवार के सबसे कमजोर और जरुरतमंद की आवश्यकता की पूर्ति सर्वप्रथम करना हमारे कर्म का मूल आधार और जीवन का सिद्धांत होना चाहिए।

विश्व परिवार अथवा संसार एक, तो परिवार एक की अवधारणा वर्तमान और भविष्य दोनों को सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक समस्याओं से निज़ात दिलाने हेतु चलाया गया आन्दोलन है। इस आन्दोलन की बुनियादी मान्यता है संसार के सभी प्राणीयों जीव–जन्तुओं में समानता और सह–अस्तित्व में विश्वास। यह आंदोलन महात्मा बुद्ध के ''जियो और जीने दो'' के सिद्धांत को व्यवहारिक धरातल पर लाने का एक प्रयास है। नाज़रथ के के ज़ीसस ने ''ईश्वर का साम्राज्य धरती पर स्थापित करने'' का आह्वान किया था। मानवता के प्रति इस प्रेम को जीसस ने अगाये की संज्ञा दी थी।

यह महान कार्य एक ऐसी संस्था द्वारा सम्पन्न किया जा रहा है जो सभी प्रकार की असमानता को समाप्त करने, मनुष्य तथा प्रकृति की अन्तरसम्बद्धता को स्थापित करने तथा आपसी भाइचारे व सहअस्तित्व और सहविकास के मूल्यों को समर्पित है। संसार एक, परिवार एक का सिद्धांत वस्तुतः एकीकृत व समावेशी दृष्टिकोण है जो सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, वैधानिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आदि सभी दृष्टिकोणों को स्वीकारते हुए एक–दूसरे की परस्पर एकता, निर्भरता एवं सहअस्तित्व की वकालत करती है। सहिष्णुता और सहयोगात्मक समायोजन वर्तमान में भारत की तथा समूचे विश्व की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

सिद्धांत :–

1. आपसी सामंजस्य, जुड़ाव और सहसम्बद्धता–जैसा कि विज्ञान द्वारा सिद्ध हो चुका है कि सभी प्राणियो का निर्माणकर्ता एक है।
2. संसार किसी खास एक की न होकर बल्कि सभी की साझी सम्पत्ति है एवं सभी का इसमें बराबर अधिकार है।
3. सत्य : अनवरत और लगातार चलने वाली प्रक्रिया है।
4. सहृदयता एवं सहनशीलता
5. चेतना
6. बुद्धिमत्ता अथवा समझ
7. स्वयं के क्रियाकलापों एवं उनके परिणाम के स्वीकारोक्ति का वचन
8. सभी रुपों में न्याय स्थापित करने का प्रयास, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय और सामाजिक न्याय की स्थापना (आर्थिक, राजनीतिक एवं वैधानिक स्तर पर) का सिद्धांत

कार्ययोजना :–

वैदिक घोषणापत्र : एक ऐसी पुस्तिका जो वर्तमान में वैदिकीय संदेश की उपयोगिता तथा आवश्यकता को स्थापित करे। साथ में समाज के नवनिर्माण (सभी तरह के भेदभाव से मुक्त) हेतु एक रुपरेखा भी प्रस्तुत करती हो।

हमारा मिशन :–

वसुधैव कुटुम्बकम् के तहत हमारा लक्ष्य आध्यात्मिक विकास तथा प्राकृतिक अधिगम की प्रक्रिया द्वारा परिवर्तन के देवदूतों को तैयार करना है। परिवर्तन के ये देवदूत स्वयं की, प्रकृति की, संस्कृति की और यहां तक की सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड के परस्पर सम्बद्धता व सहअस्तित्व के विचार को अपनायेंगे तथा उनका उनका उत्सव मनायेंगे।

परिवर्तन के ये देवदूत शब्द तथा कर्म दोनों रुप में न्याय के आग्रही और सत्य को अपनाने वाले होंगे।

हमारे मूल्यों में : –

1. आग्रहपूर्ण उत्तरदायित्व की भावना/जिम्मेदारियों को स्वीकार करने की तत्परता
2. सांसारिक/वैश्विक नातेदारी अथवा ऐसी एकता की नींव रखना जो सभी तरह की सीमाओं को महत्वहीन बना दे।
3. विविधता का सम्मान और स्वीकारोक्ति
4. सभी के लिए न्याय एवं स्वतंत्रता
5. गरीब तथा पीड़ितों के प्रति सहानुभूति तथा गरीब जरुरतमंद की मदद हेतु विशेष प्रावधान को महत्व देते हुए गरीबी और विषमता के मूल में जाकर हर प्रकार की ढांचागत हिंसा का प्रतिकार करना।

हमारे क्रियाकलाप : –

अपने मिशन की पूर्णता एवं सफलता हेतु कुछ महत्वपूर्ण क्रियाकलाप इस प्रकार होंगे–

1. एकीकरण व परिवर्तन के लिए संवादमंच की स्थापना :–यह एक ऐसा मंच होगा जहां अलग–अलग क्षेत्रों के प्रतिनिधि सामाजिक व सांस्कृतिक नेतृत्वकर्ता जो तत्कालिक समस्या के समालोचनात्मक मूल्यांकन कर सकें और आपसी संवाद द्वारा समस्या समाधान की रुपरेखा प्रस्तुत कर सके।
2. बदलाव लाने वाले देवदूतों को गढ़ना अथवा निर्माण : विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक एवं धार्मिक समूहों से नवयुवकों की ऐसी पौध तैयार करना जो नवोन्वेषी कदम (अपने समाज व संस्थाओं में नया कदम) उठाने में सक्षम हो जिससे शांतिपूर्ण, सतत और पर्यावरणीय विकास सम्भव हो सके।
3. आदिवासी नवयुवकों (स्त्री और पुरुष दोनो) को सक्षम एवं सबल बनाना ताकि वे अपने विविध संस्कृतिक मूल्यों, आध्यात्मिक व प्राकृतिक परम्पराओं और अपनी विशेष सामाजिक, राजनीतिक उम्मीदों को प्रभावपूर्ण तरीके से राष्ट्र की आवाज बना सकें। भारत में लगभग 10 करोड़ आदिवासी रहते है। सम्मोहनीय एवं आकर्षक सांस्कृति के धनी होने के वाबजूद भारतीय मुख्य धारा से अलग–थलग पड़े हैं। संसार एक, परिवार एक का हमारा आंदोलन ना सिर्फ आदिवासी संस्कृति के योगदानों को वाजिब स्थान दिलाएगा वरन् यह भी बतायेगा कि आदिवासी संस्कृति व प्राकृतिक चेतना और आध्यत्मिकता भारतीयता को सामाजिक–राजनीतिक, आर्थिक व पर्यावरणीय रुप से किस प्रकार विकासमान बना सकती है।
4. सघन विस्तारीकरण हेतु राष्ट्रीय नेटवर्क की स्थापना :– उपरोक्त तीनों क्रियाकलापों के प्रतिभागियों के बीच एक नेटवर्क तैयार किया जायेगा। जिससे स्थाइत्व एवं प्रभाविता की अधिकतम प्राप्ति हो सके। क्रियाकलाप 1 के प्रतिनिधि एक सामूहिक प्लेटफार्म बनायेंगे जिससे परिवर्तन की क्षमता का अधिकतम उपयोग हो सके। क्रियाकलाप 2 और 3 के युवजन और युवतियां ''संसार एक परिवार एक'' का गठन करेंगे। छात्र अपने स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी संगठन का निर्माण करेंगे जिससे लोगों को प्रशिक्षित कर प्रभाविता को बढ़ाया जा सके।
5. सक्षम व शुलभ वैश्विक मंच का निर्माण जहां विभिन्न संस्कृतियो के दूरद्रश्टा प्रतिनिधि एक दूसरे के साथ मिलकर परिवर्तन की रुपरेखा तैयार कर सकें। जिससे वर्तमान के संकटो से पृथ्वी की और सम्पूर्ण प्राणी जगत की रक्षा हो सके।